ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 446-448

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

एकता, समन्वय एवं सामन्जस्य की दृष्टि में भारतीय संस्कृति का गवेषणात्मक अनुशीलन

सुधीर कुमार पाण्डेय

असि0 प्रोफे0 संस्कृत, बाबा बरुआदास पी॰ जी॰ कॉलेज, परुइया आश्रम अम्बेडकरनगर (उ0प्र0) भारत

Received- 07.08.2020, Revised- 11.08.2020, Accepted - 15.08.2020 **E-mail: drsudheer80@gmail-com**

सारांश : 'आत्मसंस्कृतिर्वाव, एतै सृजमान आत्मानं संस्कुरुते'1 कहते हुए ऐतरेय ब्राह्मण में मनुष्य की अन्तःकरण की शुद्धि को ही संस्कृति कहा गया है। 'सम' पूर्वक 'कृ' धातु से 'क्तिन' प्रत्यय के योग 'संस्कृति' शब्द बना है। दैनिक व्यवहार में संस्कृति से आशय समझा जाता है– मानव की मानसिक उन्नति, उसकी प्रशंसनीय आचरण पद्धति। विद्या से विभूषित तथा सद्गुणों से मण्डित मानव सुसंस्कृत माना जाता है। उच्च कोटि का आदर्शवाद और श्रेष्ठ जीवन–पद्धित संस्कृति के अन्तर्गत माने गये हैं।1।

कुंजीभूत शब्द– आत्मसंस्कृतिर्वाव, सृजमान, आतमानं, संस्कुरुते, अन्तःकरण, संस्कृति, प्रत्यय, दैनिक व्यवहार, आशय।

यह (संस्कृति) किसी राष्ट्र की अन्तश्चेतना है और सभ्यता उसका वाह्य कलेवर। व्यक्ति के (मानसिक) विचारों से उसका (क्रियात्मक) आचार निर्धारित होता है। भूयशः पुनरावृत्त आचारों से प्रवृत्ति का जन्म होता है तथा घनीभूत प्रवृत्तियों से चरित्र बनता हैं। चरित्र निर्माण की यही व्यक्तिगत प्रक्रिया जब समाष्टिगत रुप धारण करती हैं तब वह संस्कृति कही जाती है। इस दृष्टि से संस्कृति जहाँ एक ओर विचारों की अविच्छिन्न परम्परा होने के कारण जीवन्त होती है वहीं दूसरी ओर चरम परिश्कारभूत चरित्र पर आधृत होने के कारण चिरस्थायिनी भी है।2

आचार्य कपिल देव द्विवेदी के शब्दों में संस्करणं परिष्करणं चेतस् आत्मानो वा संस्कृतिरिति समभिधीयते। सा नाम संस्कृतिर्या व्यपनयति मलं मनसः चान्चल्यं चेतसः अज्ञानावरणमात्मानश्च। पपापनयनपूर्वकमेशां प्रसादयति स्वान्तम्, दुर्भावदमनपूर्वकम संस्थापयति स्थैर्यं चेतसि, मनः शुद्धि पुरस्सरं पावयत्यात्मानमपहरति च चित्तभ्रमम्।3

संस्कृतर्हि जीवनस्यान्तरंगम् स्वरुपं प्रकाशयति। मननम् चिन्तनम दार्शनिक दृष्टिः, मनोवैज्ञानिकम् अन्वेषणम् दार्शनिकं विश्लेषणं, कर्त्तव्याकर्त्तव्यविवेचनम्, जीवनोत्कर्शाध ाोयकतत्वानां यवेषणम् , समष्टेः व्यष्टेः च स्वरुपम्, जीवनस्योद्देश्यं लक्ष्यं च लोकव्यवस्थितेः साधनानि, प्रकृतिपुरुषयोर्भेदाभेद विवेचनम्, सर्वमेतत् संस्कृति शब्देन संगृह्यते।4

परिष्करणं, संस्करणं दुरितव्यपोहनम, दुर्भावदहनंच संस्कृतिरिति। संस्कृतिर्हि जीवनोन्नतिसाधिनी सद्गुणग्राहिणी, सत्पथविहारिणी, ज्ञानज्योतिः प्रचारिणी च । यथा कृषि कर्मणि तृणादिहेयपरिहारेण अभीष्टांकुरादिरक्षणम तथैव संस्कृत्या दुर्भावनिरोधपूर्वकं दुर्गुणदमनपुरः सरं च सद्गुणरत्न संग्रहोऽनुष्ठीयते।5

संस्कृति एक गति, एक प्रवाह, एक सतत् धारा (Perennial Current) है। संस्कृति शब्द का आंग्ल भाषा में अनुवाद है–Culture, जिसके अर्थ ग्वितक Advanced & Learner's Dictionaryesa gS & advanceddevelopment of human power's, development of the body, mind and spirit by training and experience, evidence of intellectual development in human society, all the arts, beliefs, social institutions etc. characteristics of community, race, etc.

संस्कृति वह है जो अपने में अपने मूल से जुड़े हुए शाश्वत तत्वों को तो समेटे हुए ही है, साथ ही प्रत्येक नये युग के जीवन्त तत्वों को भी अपने में पचा लेती है।6

व्यापक अर्थ में संस्कृति की परिभाषा इस प्रकार हो सकती है–संस्कृति वह जीवन पद्धति है जिसकी स्थापना मानव व्यक्ति या समूह के रुप में करता है, वह उन अविष्कारों का संग्रह है जिनका अन्वेषण मानव ने अपने जीवन को सफल बनाने के लिए किया है। इन अन्वेषणों में मानव तभी सफल होता है जब वह अपनी आत्मा या वाह्य विश्व या प्रकृति दोनो का संस्कार करे। अपनी आत्मा और प्रकृति या बाह्य विश्व पर विजय पाकर ही मानव उन्नत हो सका है। अपनी आत्मा के बल का विकास करके विश्व की शक्तियों पर, प्रकृति पर, विजय प्राप्त करके ही मानव ने अपना जीवन सफल किया है। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि संस्कृति, मानव द्वारा प्रकृति पर प्राप्त विजय की क्रमबद्ध रोचक कहानी है।7 वस्तुतः संस्कृति का सम्बन्ध 'सत्यम शिवम सुन्दरम' The Truth, The God, The Beautyसे है। इसी सम्बन्ध में मैकाइवर ने कहा है– हमारे पास जो कुछ है वह सभ्यता है, हम जो कुछ हैं वह संस्कृति है। Civilization is what we have, Culture is what we are.8

भारतीय संस्कृति का उच्चतम मूल्यों से निकट का सम्बन्ध है। आध्यात्मिक और भौतिक, नैतिक और सांस्कृतिक,

PIF/6.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

सामाजिक मूल्यों का आदर्श माडल। संस्कृति से जुड़े मूल्य क्या हैं! यस.आबिद हुसैन के विचार से संस्कृति किसी समाज में निहित मूल्यों की चेतना है, जिसके अनुसार वह समाज अपने जीवन को ढ़ालना चाहता है– जैसे करुणा, दया, उदारता, अहिंसा, मानव–प्रेम, त्याग आदि। धर्म और सभ्यता की चित्तवृत्तियाँ इसमें सक्रिय रहती हैं।7। वस्तुतः वैश्विक परिदृश्यों के ज्ञान से परिपक्व होकर ही भारतीय संस्कृति में समन्वय, सामंजस्य एवं एकता की भावना का उदय होता है और इसके मूल में कारण है, भारतीय संस्कृति का सर्वदर्शी चरित्र। महाभारत में कहा गया है दुनिया को अपनी आँखों से स्वयं देखकर और इसका अनुभव स्वयं प्राप्त करके ही मनुष्य पूरा पक्का एवं सर्वदर्शी बनता है।9 मानव की यह सर्वदर्शी चरित्र ही एक उचच स्तर की संस्कृति का निर्माण करने में सक्षम होता है।

भारतीय संस्कृति में समन्वय के संकेत हमे हड़प्पा संस्कृति एवं वैदिक संस्कृति के समन्वय से ही प्राप्त होने लगते है। यह वस्तुतः परस्पर विरोधाभासी संस्कृतियों का समन्वय था। यहाँ पर प्रभूत विरोधाभासी आर्य एवं अनार्य संस्कृति में सामंजस्य स्थापित करने का संकेत प्राप्त है। प्रारम्भ में ऋग्वेद10 मे ब्रह्म, क्षत्र और विश इन तीनों वर्णो का ही उल्लेख है किन्तु पहले मण्डल11 मे चारो वर्णो के विद्यमान होने के संकेत मिलते है। उसमे लिखा है कि एक वर्ण उच्च आदर्श पर पहुँचने के लिए दूसरा उच्च महिमा प्राप्त करने के लिए, तीसरा लाभ प्राप्त करने के लिए और चौथा परिश्रम कर अपना जीवन निर्वाह करने के लिए है और फिर दशम् मडण्ल के पुरूष सूक्त में चतुर्वर्ण की उत्पत्ति होने का सिद्धान्त ही प्रतिपादित है। ध्यातव्य है कि आर्य एवं अनार्य, सांस्कृतिक संव्यवहारो एवं आचारों में परस्पर भिन्न थे12 और इसलिए यह यहाँ सांमजस्य और एकता की स्थापना के लिए ही चौथे को स्थान देने के लिए सांस्कृतिक समन्वय की भावना से किये गये एक समन्वित प्रयास की संस्तुति थी। अब तो ऋग्वेद में fetishism जैसी मान्यताऔं की भी झलक मिलने लगी।12 अतः सूक्ष्म विवृत्ति से आभास होता है कि पुरूष सूक्त की मूल भावाना भी समन्वयवादी ही थी।

उत्तर वैदिक काल मे वर्ण व्यवस्था पूर्ण रुप से स्थापित हुयी । पश्चिमी देशों से सम्पर्क कम हुआ और भारत के आदिवासियो के संस्कृति के कुछ तत्व आर्यो ने अपनी संस्कृति में मिला लिए। इस काल मे भी प्रमुख भाषा संस्कृत रही। पुरातात्विक साक्ष्य से यह निष्कर्ष नही निकलता कि वैदिक आर्य बड़ी संख्या में विदेशों से आये और उन्होने भारत के आादिवासियों को नष्ट कर दिया।आर्य और आदिवासी साथ –साथ रहते थे। दोनेा संस्कृतियों ने एक दूसरे के तत्वों का अपनी संस्कृति मे समन्वय कर लिया।13 उत्तर वैदिक काल के धार्मिक कृत्यो मे भी अनेक अनार्य तत्व सम्मिलित कर लिये गये।14 आर्ये के समाज मे अनेक अनार्य एवं आदिम जातियाँ प्रवेश कर रही थी।15

इन समन्वित आचारों एवं विचारों के परिणामस्वरुप ही 'हिन्दू धर्म एवं संस्कृति' का भी निर्माण हुआ जो एकता एवं सामंजस्य की पृष्ठभूमि पर ही उदित हुआ। यह केवल मताग्रही धार्मिक विश्वासों में ही अवलम्बित न होकर मानव विचारधाराओं के जटिल संचय के रुप में प्रस्फुटित हुआ।16 ऐसी संस्कृतियों में ही विश्व के समाज में समन्वय स्थापित करने की क्षमता है।17 आर्य संस्कृति में लिंग पूजा, मूर्ति पूजा,18fetishism19 इत्यादि अनेक धार्मिक तत्वों का उदय समन्वित सामंजस्य की भावना का प्रतिफलन है। यह वही गुण है कि जिसके कारण यहाँ पर प्रारम्भ में आने वाले आर्य, द्रविड़, ईरानी, यूनानी पार्थियन, वैक्ट्रियन, सीथियन, हूण, तुर्क (इस्लाम से पहले) इत्यादि जातियों को समन्वित भारतीय संस्कृति ने आत्मसात् कर लिया था।20

ऋगवेद में भी समन्वय की भावना और उसका महत्व इस प्रकार से किया गया है–

संगच्छध्वं सं वद्ध्वं सं वो मनांसि जानताम।
देवा भावं यथापूर्वे सज्जनानां उपासते।।21

अर्थात् जैसे पूर्ववर्ती व्यवहारकुषल ज्ञानीजन पारस्परिक अविरोध पूर्वक कार्य करते आये हैं, उसी प्रकार आप सब मिल कर चलो। समान भाव से बोलो, आप सब विद्वानों के मन एक समान हों। इसी प्रकार–

समानो मन्त्रः समितिः समानी, समानं मनः सह चित्तमेशाम्।
समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः समानेन वो हविशा जुहोमि।।22

अर्थात् आप की मन्त्रण समान हो, आप की सभा एक समान हो, मन के साथ–साथ आप का चित्त भी समान हो। मैं आपको समान मन्त्र से अभिमन्त्रित करता हूँ और समान उपभोग प्रदान करता हूँ। तथा

समानी व अकूतिः समाना ह्रदयभानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा व सुसहासति।।23

अर्थात् तुम्हारा संकल्प समान हो, तुम्हारे ह्रदय समान हों, तुम्हारे मन एक समान हों जिससे तुम्हारी षक्ति विकसित हो।

अथर्ववेद में भी इस समन्वय की भावना को इस प्रकार प्रकट किया गया है–

सध्रीचीनात्वः संमनसस्कृणोम्येकरनुश्टीन्त्संवनेन सर्वान्।।
देवा इवामृतं रक्षमाणाः सायं प्रातः सौमनसो वो अस्तु।।24

अर्थात् समान गति और उत्तम मन से युक्त आप सब को मैं उत्तम भाव से समान खान–पान वाला करता हूँ। अमृत की रक्षा करने वाले देवों के समान आप का प्रातः और सायं

PIF/6.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

कल्याण हो।

महाभारत में भी समन्वयात्मक शक्ति का महत्व इस प्रकार स्वीकार किया गया है–

सर्वथा संहतैरेव दुर्बलैर्वलवानपि।
अमित्र शक्यते हन्तुमथुवा भ्रमरैरिवव।।25

अर्थात् दुर्बल मनुष्यों के द्वारा भी सदा संगठित होकर प्रहार करने से बलवान शत्रु भी मारा जा सकता है जैसे मधुमक्खियों के समूह द्वारा मधु निकालने वाला मार दिया जा सकता है।

इसी भाव को हितोपदेश में इस प्रकार कहा गया है।

अल्यानामपि वस्तुतां संहतिः कार्यसाधिका।
तृणैर्गुणत्वमापन्नैंबध्यन्ते मतदन्तिनः।।26

महाभारत में भी अनेक स्थलों पर समन्वय के भाव दृष्टिगोचर होते हैं जैसे श्री राम द्वारा निषादराज गुह के सत्कार को स्वीकार करना और इसके साथ आलिंगन करना उच्चवर्ण का निम्नवर्ण के साथ समन्वय का ही संकेत है

पदृभ्यामभिगमाच्चैव स्नहसंदर्षनेन च।
भुजाभ्यां साधुवृत्ताभ्यां पीडयन वाक्यमब्रवीत।।
दिश्टया त्वां गुह पश्यामि ह्यरोगं सह बान्धवै।
अपि ते कुषलं राष्ट्रे मित्रेषु च वनेषु च।।27

बाल्मीकि रामायण में भी श्री राम की सुग्रीव के साथ मित्रता भी नर एवं वानर जाति की मिलन भावना का ही संकेत है–

ततोऽग्निं दीप्यमानं तौ चक्रतुश्च प्रदक्षिणम।
सुग्रीवो राघवश्चैव वयस्यत्वमुपागतो।।28

श्री राम द्वारा शबरी का आतिथ्य ग्रहण भी समन्वय की भावना के अन्तर्गत लिया जा सकता है

पाद्यमाचमनीयंच सर्व प्रदातृ यथाविधिः।
तामुवाच ततो राम श्रमवीं धर्मसंस्थिताम्।।29

भारतीय संस्कृति में एकीकरण और समन्वय की अपार शक्तियाँ युगों से चली आ रही हैं। भारतीय संस्कृति के मनीशियों की दृष्टि समन्वयात्मक रही है। जिस सत्य को उन्होंने प्राप्त किया उसे अपनी दृढ हठधर्मिता से ऐसा नही माना कि उससे बाहर अब कुछ शेष नही है। इसके विपरीत उन्होंने अपने जीवन मे तपोमय अनुसन्धान और अन्वेषण किये तथा दूसरे देशों या सम्प्रदायों के अनुसंधानो और उनके सिद्धान्तों को समादर की दृष्टि से देखा। उसमें जो कुछ ग्राह्यशीलता प्रतीत हुआ उसे उन्होने अपनाया, अपनी संस्कृति मे समावेश कर लिया, चाहे उसका उद्गम कही भी क्यो नही रहा हो। इस जिज्ञासु प्रवृत्ति और समन्वयात्मक भावना से भारत मे मानवीय जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अन्य संस्कृतियों का सुन्दर समन्वय दृष्टिगोचर होता है। प्राचीन भारत की विचारधाराओं और सामाजिक संस्थाओं में ही इसका दिग्दर्शन नहीं होता, अपितु मध्य युग में भी विरोधी प्रवृत्तियों का समन्वय कर संस्कृति को सुसमृद्ध करने के निरन्तर प्रयत्नों में भी इसकी अभिवृद्धि हुयी है तथा आज भी जब कि पश्चिम से नवीन विलक्षण प्रवृत्तियाँ और विचारधारायें हमारे देश में प्रविष्ट हो रही हैं, भारतीय संस्कृति की यह विशेषता विद्यमान है। इस संस्कृति की सम्मिश्रण और सहिष्णुता, एकीकरण और समन्वय की रचनात्मक वृत्तियों के कारण ही भारतीय संस्कृति में विविध पुनीत धाराओं का अलौकिक समागम हुआ।30

सम्प्रति, "हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, इसाई, बौद्ध, जैन आदि धर्मों के अनुयायी शांति पूर्वक सह अस्तित्व की धुरी पर भारतीय संस्कृति को न केवल गतिमान बनाए रखे हैं, अपितु इसको सुदृढ़ एवं व्यापक बनाने के प्रयासों में तल्लीन हैं और यही भारत की आध्यात्मिक आत्मा है। भारत की परिभाषा देते हुए डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णन लिखते हैं–

हिमालय समारम्य यावत विन्दू सरोवरम।
हिन्दुस्तानमितिख्यातम् आद्यान्ताक्षर योगतः।।

अर्थात् हिमालय से लेकर विन्दू सरोवर तक जो देश फैला हुआ है वह हिमालय के आदि अक्षर 'हि' और विन्दू के अन्तिम अक्षर 'न्दू' को मिलाकर हिन्दू बनता है। इसकी सीमा में निहित क्षेत्र 'हिन्दूस्तान' कहलाता है।

इस देश के लोग चाहे किसी भी धर्म या सम्प्रदाय के मानने वाले ही क्यों न हो, किसी भी जाति के प्रतिनिधि क्यों न हो, किसी भी समाज के सदस्य क्यों न हो, सभी मिश्रित संस्कृति के साझेदार हैं क्योंकि हिन्दू शब्द सम्प्रदाय, धर्म अथवा जातिवादी नहीं अपितु राष्ट्रवादी हैं" ।31

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. ऐतरेय ब्राह्मण, 6/5/1
2. प्राचीन भारतीय संस्कृति, डा. वीरेन्द्र कुमार, अथ (भूमिका) पृष्ठ–3
3. संस्कृत निबन्धशतकम, डा. कपिल देव द्विवेदी भारतीय संस्कृति पृष्ठ 176
4. संस्कृत निबन्धशतकम, डा. कपिल देव द्विवेदी वैदिकी संस्कृति पृष्ठ 173
5. संस्कृत निबन्धशतकम, डा. कपिल देव द्विवेदी संस्कृतिः संस्कृताश्रया पृष्ठ 181
6. हड़प्पा सभ्यता और संस्कृति , अंशुमान द्विवेदी पृष्ठ–7
7. प्राचीन भारतीय संस्कृति, वी. एन. लूनिया पृष्ठ–1

*****

PIF/6.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*